

श्रीहरिः

श्रीमन्महर्षि वेदव्यासप्रणीत

महाभारत

(तृतीय खण्ड)

[उद्योगपर्व और भीष्मपर्व]

(सचित्र, सरल हिंदी-अनुवादसहित)

Vol 3 of 6



श्रीमती प्रेसा, गोरखपुर

अनुवादक—

पण्डित रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राम'



उद्योगपर्व

श्लोक	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
(सेनोद्योगपर्व)					
१-राजा विराटकी सभामें भगवान् श्रीकृष्णका भाषण	...	२०३९	१८-इन्द्रका स्वर्गमें जाकर अपने राज्यका पालन करना, शल्यका युधिष्ठिरको आश्वासन देना और उनसे विदा लेकर दुर्योधनके यहाँ जाना	२०८२	
२-चलामजीका भाषण	...	२०४२	१९-युधिष्ठिर और दुर्योधनके यहाँ सहायताके लिये आयी हुई सेनाओंका संक्षिप्त विवरण	२०८३	
३-साल्यकिके बीरोचित उद्गार	...	२०४३	(संजययानपर्व)		
४-राजा द्रुपदकी सम्मति	...	२०४५	२०-द्रुपदके पुरोहितका कौरवसभामें भाषण	२०८६	
५-भगवान् श्रीकृष्णका द्वारकागमन, विराट और द्रुपदके संदेशसे राजाओंका पाण्डवपक्षकी ओरसे युद्धके लिये आगमन	...	२०४७	२१-भीष्मके द्वारा द्रुपदके पुरोहितकी बातका समर्थन करते हुए अर्जुनकी प्रशंसा करना, इसके विरुद्ध कर्णके आक्षेपपूर्ण वचन तथा धृतराष्ट्रद्वारा भीष्मकी बातका समर्थन करते हुए दूतको सम्मानित करके विदा करना	२०८७	
६-द्रुपदका पुरोहितको दौत्यकर्मके लिये अनुमति देना तथा पुरोहितका हस्तिनापुरको प्रस्थान	...	२०४८	२२-धृतराष्ट्रका संजयसे पाण्डवोंके प्रभाव-प्रतिभाका वर्णन करते हुए उसे संदेश देकर पाण्डवोंके पास भेजना	२०८९	
७-श्रीकृष्णका दुर्योधन तथा अर्जुन दोनोंको सहायता देना	...	२०५०	२३-संजयका युधिष्ठिरसे मिलकर उनकी कुशल पूछना एवं युधिष्ठिरका संजयसे कौरवपक्षका कुशल-समाचार पूछते हुए उससे सारगर्भित प्रश्न करना	२०९४	
८-शल्यका दुर्योधनके सत्कारसे प्रसन्न हो उसे बर देना और युधिष्ठिरसे मिलकर उन्हें आश्वासन देना	...	२०५३	२४-संजयका युधिष्ठिरको उनके प्रश्नोंका उत्तर देते हुए उन्हें राजा धृतराष्ट्रका संदेश सुनानेकी प्रतीक्षा करना	२०९७	
९-इन्द्रके द्वारा विशिराका वध, वृत्रासुरकी उत्पत्ति, उसके साथ इन्द्रका युद्ध तथा देवताओंकी पराजय	...	२०५७	२५-संजयका युधिष्ठिरको धृतराष्ट्रका संदेश सुनाना एवं अपनी ओरसे भी शान्तिके लिये प्रार्थना करना	२०९८	
१०-इन्द्रसहित देवताओंका भगवान् विष्णुकी करणमें जाना और इन्द्रका उनके आज्ञानुसार वृत्रासुरसे संघि करके अवसर पाकर उसे मारना एवं ब्रह्महत्याके भयसे जलमें छिपना	...	२०६२	२६-युधिष्ठिरका संजयको इन्द्रप्रस्थ छौटानेसे ही शान्ति होना सम्भव बतलाना	२१००	
११-देवताओं तथा ऋषियोंके अनुरोधसे राजा नहुषका इन्द्रके पक्षपर अभिविक्त होना एवं काम-भोगमें आसक्त होना और चिन्तामें पड़ी हुई इन्द्राणीकी बृहस्पतिक आश्वासन	...	२०६६	२७-संजयका युधिष्ठिरको युद्धमें दोषकी सम्भावना बतलाकर उन्हें युद्धसे उपरत करनेका प्रयत्न करना	२१०३	
१२-देवता-नहुष-संवाद, बृहस्पतिके द्वारा इन्द्राणीकी रक्षा तथा इन्द्राणीका नहुषके पास कुछ समयकी अवधि माँगनेके लिये जाना	...	२०६८	२८-संजयको युधिष्ठिरका उत्तर	२१०६	
१३-नहुषका इन्द्राणीको कुछ कालकी अवधि देना, इन्द्रका ब्रह्महत्यासे उद्गार तथा शचीद्वारा राजिदेयीकी उपासना	...	२०७१	२९-संजयकी बातोंका प्रत्युत्तर देते हुए श्रीकृष्णका उसे धृतराष्ट्रके लिये चेतावनी देना	२१०८	
१४-उपश्रुति देवीकी सहायतासे इन्द्राणीकी इन्द्रसे भेंट	...	२०७३	३०-संजयकी विदाई तथा युधिष्ठिरका संदेश	२११५	
१५-इन्द्रकी आज्ञासे इन्द्राणीके अनुरोधपर नहुषका ऋषियोंको अपना वाहन बनाना तथा बृहस्पति और अश्विका संवाद	...	२०७४	३१-युधिष्ठिरका मुख्य-मुख्य कुसवंशियोंके प्रति संदेश	२१२०	
१६-बृहस्पतिद्वारा अग्नि और इन्द्रका साधन तथा बृहस्पति एवं लोकपालोंकी इन्द्रसे बातचीत	...	२०७७	३२-अर्जुनद्वारा कौरवोंके लिये संदेश देना, संजयका हस्तिनापुर जा धृतराष्ट्रसे मिलकर उन्हें युधिष्ठिरका कुशल-समाचार कहकर धृतराष्ट्रके कार्यकी निन्दा करना	२१२२	
१७-भगवत्पञ्चीका इन्द्रसे नहुषके पतनका वृत्तान्त बतलाना	...	२०८०	(प्रजागरपर्व)		
			३३-धृतराष्ट्र-विदुर-संवाद	२१२६	
			३४-धृतराष्ट्रके प्रति विदुरजीके नीतियुक्त वचन	२१३६	

- १५-विदुरके द्वारा केशिनीके लिये सुभन्वाके साथ विरोचनके विवादका वर्णन करते हुए धृतराष्ट्रको धर्मोपदेश ... २१४२
- १६-दत्तात्रेय और साध्व देवताओंके संवादका उल्लेख करके महाकुलीन लोगोंका लक्षण बतलाते हुए विदुरका धृतराष्ट्रको समझाना ... २१४८
- १७-धृतराष्ट्रके प्रति विदुरजीका हितोपदेश ... २१५४
- १८-विदुरजीका नीतियुक्त उपदेश ... २१६०
- १९-धृतराष्ट्रके प्रति विदुरजीका नीतियुक्त उपदेश ... २१६३
- ४०-धर्मकी महत्ताका प्रतिपादन तथा ब्राह्मण आदि चारों वर्णोंके धर्मका संक्षिप्त वर्णन ... २१६९

(सन्तसुजातपर्व)

- ४१-विदुरजीके द्वारा स्मरण करनेपर आये हुए सन्तसुजात ऋषिसे धृतराष्ट्रको उपदेश देनेके लिये उनकी प्रार्थना ... २१७२
- ४२-सन्तसुजातजीके द्वारा धृतराष्ट्रके विविध प्रश्नोंका उत्तर ... २१७३
- ४३-ब्रह्मज्ञानमें उपयोगी मौन, तप, त्याग, अग्रमाद एवं दम आदिके लक्षण तथा मदादि दोषोंका निरूपण ... २१७८
- ४४-ब्रह्मचर्य तथा ब्रह्मका निरूपण ... २१८३
- ४५-गुण-दोषोंके लक्षणोंका वर्णन और ब्रह्मविद्याका प्रतिपादन ... २१८६
- ४६-परमात्माके स्वरूपका वर्णन और योगीजनोंके द्वारा उनके साक्षात्कारका प्रतिपादन ... २१८८

(यानसंधिपर्व)

- ४७-पाण्डवोंके महोत्से लीटते हुए संजयका कौरव-सभामें आगमन ... २१९३
- ४८-संजयका कौरवसभामें अर्जुनका संदेश सुनाना ... २१९४
- ४९-भीष्मका दुर्योधनको संधिके लिये समझाते हुए भीष्मण और अर्जुनकी महिमा बताना एवं कर्णपर आशेष करना; कर्णकी आत्म-प्रशंसा; भीष्मके द्वारा उसका पुनः उपहास एवं द्रोणाचार्यद्वारा भीष्मजीके कथनका अनुमोदन ... २२०६
- ५०-संजयद्वारा युधिष्ठिरके प्रधान सहायकोंका वर्णन ... २२१०
- ५१-भीष्मकेने फराकसे डरे हुए धृतराष्ट्रका विलप ... २२१४
- ५२-धृतराष्ट्रद्वारा अर्जुनसे प्राप्त होनेवाले भयका वर्णन ... २२१८
- ५३-कौरवसभामें धृतराष्ट्रका मुदसे भय दिखाकर शान्तिके लिये प्रस्ताव करना ... २२२०
- ५४-संजयका धृतराष्ट्रको उनके शोक बताते हुए दुर्योधनपर शासन करनेकी सलाह देना ... २२२१
- ५५-धृतराष्ट्रको चैर्य देते हुए दुर्योधनद्वारा अपने उत्कर्ष और पाण्डवोंके अपकर्षका वर्णन ... २२२३

- ५६-संजयद्वारा अर्जुनके भय एवं असौख्य तथा युधिष्ठिर आदिके शोकोंका वर्णन ... २२२७
- ५७-संजयद्वारा पाण्डवोंकी युद्धनिष्पन्न तैयारीका वर्णन; धृतराष्ट्रका विलप; दुर्योधनद्वारा अपनी प्रबलताका प्रतिपादन; धृतराष्ट्रका उसपर अविश्वास तथा संजयद्वारा धृष्टद्युम्नकी शक्ति एवं संदेशका कथन ... २२२९
- ५८-धृतराष्ट्रका दुर्योधनकी संधिके लिये समझाना; दुर्योधनका अहंकारपूर्वक पाण्डवोंसे युद्ध करनेका ही निश्चय तथा धृतराष्ट्रका अन्य योद्धाओंको युद्धसे भय दिलाना ... २२३१
- ५९-संजयका धृतराष्ट्रके पूछनेपर उन्हें भीष्मण और अर्जुनके अन्तःपुरमें कहे हुए संदेश सुनाना ... २२३६
- ६०-धृतराष्ट्रके द्वारा कौरव-पाण्डवोंकी शक्तिका तुलनात्मक वर्णन ... २२३८
- ६१-दुर्योधनद्वारा आत्मप्रशंसा ... २२४०
- ६२-कर्णकी आत्मप्रशंसा; भीष्मके द्वारा उसपर आशेष; कर्णका सभा त्यागकर जाना और भीष्मका उसके प्रति पुनः आशेषयुक्त वचन कहना ... २२४२
- ६३-दुर्योधनद्वारा अपने पक्षकी प्रबलताका वर्णन करना और विदुरका दमकी महिमा बताना ... २२४४
- ६४-विदुरका कौटुम्बिक कलहसे हानि बताते हुए धृतराष्ट्रको संधिकी सलाह देना ... २२४६
- ६५-धृतराष्ट्रका दुर्योधनको समझाना ... २२४८
- ६६-संजयका धृतराष्ट्रको अर्जुनका संदेश सुनाना ... २२५०
- ६७-धृतराष्ट्रके पास व्यास और गन्धारीका आगमन तथा व्यासजीका संजयको भीष्मण और अर्जुनके सम्बन्धमें कुछ कहनेका आदेश ... २२५१
- ६८-संजयका धृतराष्ट्रको भगवान् भीष्मणकी महिमा बतलाना ... २२५३
- ६९-संजयका धृतराष्ट्रको भीष्मण-प्राप्ति एवं तत्त्वज्ञानका साधन बताना ... २२५३
- ७०-भगवान् भीष्मणके विभिन्न नामोंकी व्युत्पत्तियोंका कथन ... २२५५
- ७१-धृतराष्ट्रके द्वारा भगवद्-गुणगान ... २२५७

(भगवद्गीतापर्व)

- ७२-युधिष्ठिरका भीष्मणसे अपना अभिप्राय निवेदन करना; भीष्मणका शान्तिवृत्त बनकर कौरवसभामें जानेके लिये उद्यत होना और इस विषयमें उन दोनोंका वार्तालाप ... २२५८
- ७३-भीष्मणका युधिष्ठिरको युद्धके लिये प्रोत्साहन देना ... २२६५

७४-भीमसेनका शान्तिवियवक प्रस्ताव ... २२६८
 ७५-भीष्मका भीमसेनको उत्तेजित करना ... २२७०
 ७६-भीमसेनका उत्तर ... २२७२
 ७७-भीष्मका भीमसेनको आश्वासन देना ... २२७३
 ७८-अर्जुनका कथन ... २२७५
 ७९-भीष्मका अर्जुनको उत्तर देना ... २२७६
 ८०-नकुलका निवेदन ... २२७८
 ८१-बुद्धके लिये सहदेव तथा सात्यकिकी सम्मति और समस्त योद्धाओंका समर्थन ... २२७९
 ८२-द्रौपदीका भीष्मको अपना दुःख सुनाना और भीष्मका उसे आश्वासन देना ... २२८०
 ८३-भीष्मका इक्ष्वाकुपुरको प्रस्थान; बुधिक्षि-
 का माता कुन्ती एवं कौरवोंके लिये संदेश तथा
 भीष्मको मार्गमें दिव्य महर्षियोंका दर्शन २२८३
 ८४-मार्गमें शुभाशुभ शकुनोंका वर्णन तथा
 मार्गमें लोगोद्धार सत्कार परते हुए भीष्म-
 का वृक्षसल पहुँचकर वहाँ विश्राम करना २२८५
 ८५-दुर्योधनका धृतराष्ट्र आदिकी अनुमतिसे
 भीष्मके स्वागत-सत्कारके लिये मार्गमें
 विश्राम-स्थान बनवाना ... २२९१
 ८६-धृतराष्ट्रका भगवान् भीष्मकी अगवाणी
 करके उन्हें भेंट देने एवं दुःशासनके महलमें
 ठहरानेका विचार प्रकट करना ... २२९३
 ८७-विदुरका धृतराष्ट्रको भीष्मकी आज्ञाका
 पालन करनेके लिये समझाना ... २२९४
 ८८-दुर्योधनका भीष्मके निजयमें अपने विचार
 कहना एवं उसकी कुमन्त्रणासे कुपित हो
 भीष्मजीका सभासे उठ जाना ... २२९५
 ८९-भीष्मका स्वागत; धृतराष्ट्र तथा विदुरके
 घरपर उनका आतिथ्य ... २२९७
 ९०-भीष्मका कुन्तीके समीप जाना एवं
 बुधिक्षि का कुशल-समाचार पूछकर अपने
 दुःखोंका स्मरण करके विलाप करती हुई
 कुन्तीको आश्वासन देना ... २३००
 ९१-भीष्मका दुर्योधनके घर जाना एवं उसके
 निमन्त्रणको अस्वीकार करके विदुरजीके
 घरपर भोजन करना ... २३०३
 ९२-विदुरजीका धृतराष्ट्रपुत्रोंकी दुर्भावना बताकर
 भीष्मको उनके कौरवसभामें जानेका
 अनौचित्य बतलाना ... २३१०
 ९३-भीष्मका कौरव-याण्डवोंमें संविस्थापनके
 प्रयत्नका औचित्य बताना ... २३१२
 ९४-दुर्योधन एवं शकुनिके द्वारा बुलाये जानेपर
 भगवान् भीष्मका रथपर बैठकर प्रस्थान
 एवं कौरवसभामें प्रवेश और स्वागतके
 पश्चात् आसनग्रहण ... २३१४

९५-कौरवसभामें भीष्मका प्रभावशाली भाषण २३१९
 ९६-परशुरामजीका दम्भोद्भवकी कथाद्वारा नर-
 नाशयणस्वरूप अर्जुन और भीष्मका
 महत्त्व वर्णन करना ... २३२३
 ९७-कण्व मुनिका दुर्योधनको संबोधित लिये समझाते
 हुए मातलिका उपाख्यान आरम्भ करना ... २३२७
 ९८-मातलिका अपनी पुत्रीके लिये नर खोजनेके
 निमित्त नारदजीके साथ वन्यलोकमें भ्रमण
 करते हुए अनेक आश्चर्यजनक वस्तुएँ देखना २३२९
 ९९-नारदजीके द्वारा पाताललोकका प्रदर्शन ... २३३१
 १००-क्षिरमयपुरका दिग्दर्शन और वर्णन ... २३३२
 १०१-गन्धर्वलोक तथा गरुडकी संतानोंका वर्णन ... २३३४
 १०२-सुरभि और उसकी संतानोंके साथ रत्नात्मक
 सुखका वर्णन ... २३३५
 १०३-नागलोकके नागोंका वर्णन और मातलिका
 नागकुमार सुमुखके साथ अपनी कन्याको
 ब्याहनेका निश्चय ... २३३६
 १०४-नारदजीका नागराज आर्यकके सम्मुख सुमुखके
 साथ मातलिकी कन्याके विवाहका प्रस्ताव
 एवं मातलिका नारदजी, सुमुख एवं आर्यक-
 के साथ हस्त्रके पात भाकर उनके द्वारा
 सुमुखको दीर्घायु प्रदान कराना तथा सुमुख-
 गुणकेशी-विवाह ... २३३८
 १०५-भगवान् विष्णुके द्वारा गरुडका गर्वभञ्जन
 तथा दुर्योधनद्वारा कण्वमुनिके उपदेशकी
 अवहेलना ... २३४०
 १०६-नारदजीका दुर्योधनको समझाते हुए
 धर्मराजके द्वारा विश्वामित्रजीकी परीक्षा तथा
 गालवके विश्वामित्रसे गुरुदक्षिणा माँगनेके
 लिये हठका वर्णन ... २३४३
 १०७-गालवकी चिन्ता और गरुडका आकर उन्हें
 आश्वासन देना ... २३४५
 १०८-गरुडका गालवसे पूर्व दिशाका वर्णन करना २३४६
 १०९-दक्षिण दिशाका वर्णन ... २३४८
 ११०-पश्चिम दिशाका वर्णन ... २३४९
 १११-उत्तर दिशाका वर्णन ... २३५१
 ११२-गरुडकी पीठपर बैठकर पूर्व दिशाकी ओर
 जाते हुए गालवका उनके वेगसे व्याकुल होना २३५३
 ११३-शुभम पर्वतके शिखरपर महर्षि गालव और
 गरुडकी तपस्विनी शाण्डिलीसे भेंट तथा
 गरुड और गालवका गुरुदक्षिणा चुकानेके
 विषयमें परस्पर विचार ... २३५४
 ११४-गरुड और गालवका राज बहातिके वहाँ
 आकर गुरुको देनेके लिये स्वाभिकर्षण पीढ़ीकी
 याचना करना ... २३५६

- ११५-ययाति का गालव को अपनी कन्या देना और गालव का उसे लेकर अयोध्या-नरेश के यहाँ जाना ... २३५८
- ११६-हयशका दो सौ श्यामकर्ण घोड़े देकर ययाति-कन्या के गर्भ से वसुमना नामक पुत्र उत्पन्न करना और गालव का इस कन्या के साथ वहाँ से प्रस्थान ... २३५९
- ११७-दिवोदास का ययातिकन्या माधवी के गर्भ से प्रसव नामक पुत्र उत्पन्न करना ... २३६१
- ११८-उशीनर का ययातिकन्या माधवी के गर्भ से शिवि नामक पुत्र उत्पन्न करना; गालव का उस कन्या को साथ लेकर जाना और मार्ग में गहड़का दर्शन करना ... २३६२
- ११९-गालव का छः सौ घोड़ों के साथ माधवी को विश्वामित्रजी की सेवा में देना और उनके द्वारा उसके गर्भ से अशक नामक पुत्र की उत्पत्ति होने के बाद उस कन्या को ययाति के यहाँ लौटा देना ... २३६४
- १२०-माधवी का वन में जाकर तप करना तथा ययाति का स्वर्ग में जाकर सुसभोग के पश्चात् मोहवश तेजोहीन होना ... २३६५
- १२१-ययाति का स्वर्गलोक से पतन और उनके दौहित्रों, पुत्री तथा गालव मुनिका उन्हें पुनः स्वर्गलोक में पहुँचाने के लिये अपना पुण्य देने के लिये उद्यत होना ... २३६७
- १२२-सत्यज्ञ एवं दौहित्रों के पुण्यदान से ययाति का पुनः स्वर्गारोहण ... २३६९
- १२३-स्वर्गलोक में ययाति का स्वागत; ययाति के पूछने पर ब्रह्माजी का अभिमान को ही पतन का कारण बताना तथा नारदजी का दुर्योधन को समझाना ... २३७०
- १२४-धृतराष्ट्र के अनुरोध से भगवान् श्रीकृष्ण का दुर्योधन को समझाना ... २३७२
- १२५-भीष्म, द्रोण, विदुर और धृतराष्ट्र का दुर्योधन को समझाना ... २३७७
- १२६-भीष्म और द्रोण का दुर्योधन को पुनः समझाना २३७९
- १२७-श्रीकृष्ण को दुर्योधन का उत्तर; उसका पाण्डवों को राक्षस न देने का निश्चय ... २३८०
- १२८-श्रीकृष्ण का दुर्योधन को पटकारना और उसे क्रुद्ध होकर सभा से जाते देख उसे कैद करने की सलाह देना ... २३८२
- १२९-धृतराष्ट्र का गान्धारी को बुलाना और उसका दुर्योधन को समझाना ... २३८५
- १३०-दुर्योधन के पक्षपात का सत्यकि द्वारा मंह-कीड़, भीकृष्ण की सिंहाजना तथा धृतराष्ट्र और विदुर का दुर्योधन को पुनः समझाना २३८९
- १३१-भगवान् श्रीकृष्ण का निश्चय दर्शन कराकर कौरव सभा से प्रस्थान ... २३९३
- १३२-श्रीकृष्ण के पूछने पर कुन्ती का उन्हें पाण्डवों से कहने के लिये संदेश देना ... २३९५
- १३३-कुन्ती के द्वारा विदुरोपाख्यान का आरम्भ; विदुर का राणभूमि से भागकर आये हुए अपने पुत्र को कड़ी पटकार देकर पुनः युद्ध के लिये उत्साहित करना ... २३९८
- १३४-विदुर का अपने पुत्र को युद्ध के लिये उत्साहित करना ... २४०१
- १३५-विदुर और उसके पुत्र का संवाद—विदुर के द्वारा कार्य में सफलता प्राप्त करने तथा शत्रुवशीकरण के उपायों का निर्देश ... २४०४
- १३६-विदुर के उपदेश से उसके पुत्र का युद्ध के लिये उद्यत होना ... २४०७
- १३७-कुन्ती का पाण्डवों के लिये संदेश देना और श्रीकृष्ण का उनसे विदा लेकर उपरान्त नगर में जाना ... २४०९
- १३८-भीष्म और द्रोण का दुर्योधन को समझाना २४११
- १३९-भीष्म से वार्तालाप आरम्भ करके द्रोणाचार्य का दुर्योधन को पुनः संधि के लिये समझाना ... २४१३
- १४०-भगवान् श्रीकृष्ण का कर्ण को पाण्डवपक्ष में आ जाने के लिये समझाना ... २४१५
- १४१-कर्ण का दुर्योधन के पक्ष में रहने के निश्चित विचार का प्रतिपादन करते हुए समरबल के रूपका वर्णन करना ... २४१६
- १४२-भगवान् श्रीकृष्ण का कर्ण से पाण्डवपक्ष की निश्चित विजय का प्रतिपादन ... २४२०
- १४३-कर्ण के द्वारा पाण्डवों की विजय और कौरवों की पराजय दृष्टि करने वाले लक्ष्मणों एवं अपने स्वप्न का वर्णन ... २४२१
- १४४-विदुर की बात सुनकर युद्ध के भविष्य दुष्परिणाम से व्यथित हुई कुन्ती का बहुत सौच-विचार के बाद कर्ण के पास जाना ... २४२५
- १४५-कुन्ती का कर्ण को अपना प्रथम पुत्र बताकर उससे पाण्डवपक्ष में मिल जाने का अनुरोध २४२७
- १४६-कर्ण का कुन्ती को उत्तर तथा अर्जुन को छोड़कर दोष चारों पाण्डवों को न मारने की प्रतीका ... २४२८
- १४७-सुभिक्षि के पूछने पर श्रीकृष्ण का कौरव-पक्ष में व्यक्त किये हुए भीष्मजी के कथन सुनना २४३०
- १४८-द्रोणाचार्य, विदुर तथा गान्धारी के सुभिक्षि एवं महत्त्वपूर्ण वचनों का भगवान् श्रीकृष्ण के द्वारा कथन ... २४३३

१४९-दुर्योधनके प्रति धृतराष्ट्रके युक्तिसंगत वचन-

पाण्डवोंको आधा राज्य देनेके लिये आदेश... २४३६

१५०-भीष्मका कौरवोंके प्रति साम, दान और भेदनीतिके प्रयोगकी अस्पष्टता बताकर दण्डके प्रयोगपर जोर देना ... २४३८

(सैन्यनिर्याणपर्व)

१५१-पाण्डवपक्षके सेनापतिका चुनाव तथा पाण्डवसेनाका कुरुक्षेत्रमें प्रवेश ... २४३९

१५२-कुरुक्षेत्रमें पाण्डवसेनाका पड़ाव तथा शिविर-निर्माण ... २४४४

१५३-दुर्योधनका सेनाको सुवर्जित होने और शिविर निर्माण करनेके लिये आज्ञा देना तथा सैनिकोंकी रणवाक्त्राके लिये तैयारी २४४५

१५४-सुभिक्षिरक्ष भगवान् भीष्मपक्षके अपने समवर्जित कर्तव्यके विषयमें पूछना; भगवान्का युद्धको ही कर्तव्य बताना तथा इस विषयमें सुभिक्षिरक्ष संताप और अर्जुनद्वारा भीष्मपक्षके वचनोंका समर्थन ... २४४७

१५५-दुर्योधनके द्वारा सेनाओंका विभाजन और पृथक्-पृथक् अशौहिणियोंके सेनापतियोंका अभियेक ... २४४९

१५६-दुर्योधनके द्वारा भीष्मजीका प्रधान-सेनापतिके पदपर अभियेक और कुरुक्षेत्रमें पहुँचकर शिविर-निर्माण ... २४५१

१५७-सुभिक्षिरके द्वारा अपने सेनापतियोंका अभियेक; यदुवंशियोंसहित बलरामजीका आगमन तथा पाण्डवोंसे विश्वास लेकर उनका तीर्थयात्राके लिये प्रस्थान ... २४५४

१५८-दम्भीका स्थापना देनेके लिये आना; परंतु पाण्डव और कौरव दोनों पक्षोंके द्वारा कोरा उधर पाकर लौट जाना ... २४५६

१५९-धृतराष्ट्र और संजयका संवाद ... २४५९

(उल्कदूतागमनपर्व)

१६०-दुर्योधनका उल्कको दूत बनाकर पाण्डवोंके पास भेजना और उनसे कहनेके लिये संदेश देना २४६०

१६१-पाण्डवोंके शिविरमें पहुँचकर उल्कका भरी सभामें दुर्योधनका संदेश सुनाना ... २४६८

१६२-पाण्डवपक्षकी ओरसे दुर्योधनको उसके संदेशका उत्तर ... २४७१

१६३-योंकों पाण्डवों; विराट; द्रुपद; शिशुगंडी और द्रुपयुक्ता संदेश लेकर उल्कका लौटना और उल्ककी बात सुनकर दुर्योधनका सेनाको युद्धके लिये तैयार होनेका आदेश देना ... २४७५

१६४-पाण्डवसेनाका युद्धके मैदानमें जाना और द्रुपयुक्ताके द्वारा योद्धाओंकी अपने-अपने योग्य विधियोंके साथ युद्ध करनेके लिये नियुक्ति २४७८

(रथातिरथसंख्यानपर्व)

१६५-दुर्योधनके पूछनेपर भीष्मका कौरवपक्षके रथियों और अतिरथियोंका परिचय देना ... २४७९

१६६-कौरवपक्षके रथियोंका परिचय ... २४८१

१६७-कौरवपक्षके रथी; महारथी और अतिरथियोंका वर्णन ... २४८३

१६८-कौरवपक्षके रथियों और अतिरथियोंका वर्णन; कर्ण और भीष्मका रथपूर्वक संवाद तथा दुर्योधनद्वारा उसका निवारण ... २४८५

१६९-पाण्डवपक्षके रथी आदिका एवं उनकी महिमाका वर्णन ... २४८८

१७०-पाण्डवपक्षके रथियों और महारथियोंका वर्णन तथा विराट और द्रुपदकी प्रशंसा ... २४८९

१७१-पाण्डवपक्षके रथी, महारथी एवं अतिरथी आदिका वर्णन ... २४९०

१७२-भीष्मका पाण्डवपक्षके अतिरथी कीरोंका वर्णन करते हुए शिशुगंडी और पाण्डवोंका वध न करनेका कथन ... २४९२

(अम्बोपाख्यानपर्व)

१७३-अम्बोपाख्यानका आरम्भ-भीष्मजीके द्वारा काशिराजकी कन्याओंका अपहरण ... २४९३

१७४-अम्बाका शास्त्रराजके प्रति अनुराग प्रकट करके उनके पास जानेके लिये भीष्मसे आज्ञा माँगना ... २४९५

१७५-अम्बाका शास्त्रके यहाँ जाना और उससे परित्यक्त होकर तारुणोंके आश्रममें आना; वहाँ शैलवाल्मीक और अम्बाका संवाद ... २४९५

१७६-तारुणोंके आश्रममें राजर्षि शैलवाल्मीक और अकृतवर्णका आगमन तथा उनसे अम्बाकी बातचीत ... २४९८

१७७-अकृतवर्ण और परशुरामजीकी अम्बासे बातचीत ... २५०२

१७८-अम्बा और परशुरामजीका संवाद; अकृतवर्णकी सलाह; परशुराम और भीष्मकी रथपूर्ण बातचीत तथा उन दोनोंका युद्धके लिये कुरुक्षेत्रमें उतरना ... २५०४

१७९-संकल्पनिर्मित रथपर आरुढ़ परशुरामजीके साथ भीष्मका युद्ध प्रारम्भ करना ... २५१०

१८०-भीष्म और परशुरामका घोर युद्ध ... २५११

१८१-भीष्म और परशुरामका युद्ध ... २५१५

१८२-भीष्म और परशुरामका युद्ध ... २५१६

- १८३-भीष्मकी भद्रवतुओंसे प्रस्तापनाककी प्राप्ति २५१८
 १८४-भीष्म तथा परशुरामजीका एक दूसरेपर
 शक्ति और ब्रह्मास्त्रका प्रयोग ... २५१९
 १८५-देवताओंके मना करनेसे भीष्मका प्रस्तापना-
 स्त्रको प्रयोगमें न लाना तथा पितर, देवता
 और गङ्गाके आग्रहसे भीष्म और
 परशुरामके युद्धकी समाप्ति ... २५२०
 १८६-अम्बाकी कठोर तपस्या ... २५२३
 १८७-अम्बाका द्वितीय जन्ममें पुनः तप करना
 और महादेवजीसे अभीष्ट वरकी प्राप्ति
 तथा उसका चिताकी आगमें प्रवेश ... २५२५
 १८८-अम्बाका राजा द्रुपदके वहाँ कन्याके रूपमें
 जन्म, राजा तथा रानीका उसे पुत्ररूपमें
 प्रसिद्ध करके उसका नाम शिलङ्गी रखना ... २५२६
 १८९-शिलङ्गीका विवाह तथा उसके स्त्री होनेका
 समाचार पाकर उसके श्वशुर दशार्णराजका
 महान् कोप ... २५२८
- १९०-हिरण्यवर्माके आक्रमणके भयसे पकराये हुए
 द्रुपदका अपनी महारानीसे संकटनिवारणका
 उपाय पूछना ... २५२९
 १९१-द्रुपदपत्नीका उत्तर, द्रुपदके द्वारा नगरस्थाकी
 व्यवस्था और देवाराधन तथा शिलङ्गिनीका
 वनमें जाकर स्तूणाकर्ण नामक वृक्षसे अपने
 दुःखनिवारणके लिये प्रार्थना करना ... २५३०
 १९२-शिलङ्गीको पुत्रत्वकी प्राप्ति, द्रुपद और
 हिरण्यवर्माकी प्रयत्नता, स्तूणाकर्णको कुनेरका
 शाप तथा भीष्मका शिलङ्गीकी न
 मारनेका निश्चय ... २५३२
 १९३-दुर्योधनके पूछनेपर भीष्म आदिके द्वारा
 अपनी-अपनी शक्तिका वर्णन ... २५३७
 १९४-अर्जुनके द्वारा अपनी, अपने सहायकोंकी
 तथा युधिष्ठिरकी भी शक्तिका परिचय देना २५३८
 १९५-कौरवसेनाका राजके लिये प्रस्थान ... २५३९
 १९६-पाण्डवसेनाका युद्धके लिये प्रस्थान ... २५४१

चित्र-सूची

(रंगीन)

- १-विराटकी राजसभामें श्रीकृष्णका
 भ्रमण ... २०३९
 २-संजयकी श्रीकृष्ण एवं पाण्डवोंसे भेंट ... २०९८
 ३-द्रौपदीका श्रीकृष्णसे खुले केशोंकी
 बात बाद रखनेका अनुरोध ... २१९३
 ४-इक्ष्वाकुपुरके मार्गमें श्रुगियोंका
 आकर श्रीकृष्णसे मिलना ... २१८७
 ५-कौरवसभामें विराट् रूप ... २१९३

(सादा)

- ६-दुर्योधन और अर्जुनका श्रीकृष्णसे युद्धके
 लिये सहायता माँगना ... २०५०
 ७-नहुषका स्वर्गसे पतन ... २०८०
 ८-आकाशचारी भगवान् सूर्यदेव ... २१०९
 ९-विदुर और धृतराष्ट्र ... २१२६
 १०-प्रह्लादजीका व्यास ... २१४९
 ११-आग्नेय मुनि और साध्वराज ... २१४५
 १२-भीष्मसुजात और महाराज धृतराष्ट्र ... २१७३
- १३-धृतराष्ट्रकी सभामें संजय पाण्डवोंका
 संदेश सुना रहे हैं ... २२१६
 १४-भीमसेनका बल बलवानसे हुए
 धृतराष्ट्रका विलाप ... २२१६
 १५-धृतराष्ट्रके द्वारा श्रीकृष्णका स्वागत ... २२९९
 १६-श्रीकृष्णका कौरव-सभामें प्रवेश ... २३१७
 १७-गोमाता सुरभि ... २३१५
 १८-भगवान् विष्णुके द्वारा गरुड़का
 गर्भनाश ... २३१५
 १९-ययातिका स्वर्गारोहण ... २३७०
 २०-दुर्योधनको गान्धारीकी फटकार ... २३८६
 २१-भगवान् श्रीकृष्ण कर्णको समझा रहे हैं ... २४१५
 २२-पाण्डवोंके डेरेमें बलरामजी ... २४५५
 २३-पाण्डवोंकी विशाल सेना ... २४७८
 २४-भीष्म-दुर्योधन-संवाद ... २४८०
 २५-पाण्डव-सेनापति धृष्टद्युम्न ... २४९०
 २६-भीष्म और परशुरामके युद्धमें नारदजी-
 द्वारा बीच-बचाव ... २५२१
 २७-(६० छाहन चित्र फरमेंमें)

भीष्मपर्व

अध्याय विषय पृष्ठ-संख्या अध्याय विषय पृष्ठ-संख्या

(जम्बूखण्डविनिर्माणपर्व)

१-कुरुक्षेत्रमें उभय पक्षके सैनिकोंकी स्थिति तथा युद्धके नियमोंका निर्माण	...	२५४३
२-वेदव्यासजीके द्वारा संजयको दिव्य दृष्टिका दान तथा भयसूचक उल्हासोंका वर्णन	...	२५४५
३-व्यासजीके द्वारा अमरलक्ष्मणक उल्हासों तथा विजयसूचक लक्षणोंका वर्णन	...	२५४७
४-धृतराष्ट्रके बूढ़ेनेत्र संजयके द्वारा भूमिके महत्त्वका वर्णन	...	२५५३
५-पञ्चमहाभूतों तथा सुदर्शनद्वीपका संक्षिप्त वर्णन	...	२५५५
६-सुदर्शनके वर्ण, पर्वत, मेरुगिरि, मङ्गलानदी तथा नाशकृत्तिका वर्णन	...	२५५६
७-उत्तर कुरु, भद्राश्ववर्ष तथा मातृवर्षका वर्णन	...	२५५९
८-रमणक, शिखरक, भृङ्गवान् पर्वत तथा ऐरावतवर्षका वर्णन	...	२५६१
९-भारतवर्षकी नदियों, देशों तथा जनपदोंके नाम और भूमिका महत्त्व	...	२५६३
१०-भारतवर्षमें शुणोंके अनुसार मनुष्योंकी आयु तथा शुणोंका निरूपण	...	२५६६

(भीमपर्व)

११-शाकद्वीपका वर्णन	...	२५६७
१२-कुश, क्रौञ्च और पुष्कर आदि द्वीपोंका तथा राहु, तपस्य एवं चन्द्रमाके प्रमाणका वर्णन	...	२५७०

(श्रीमद्भगवद्गीतापर्व)

१३-संजयका युद्धभूमिसे लौटकर धृतराष्ट्रको भीष्मकी मृत्युका समाचार सुनाना	...	२५७३
१४-धृतराष्ट्रका विलाप करते हुए भीष्मजीके मारे जानेकी घटनाको विस्तारपूर्वक जाननेके लिये संजयसे प्रश्न करना	...	२५७४
१५-संजयका युद्धके वृत्तान्तका वर्णन आरम्भ करना—दुर्योधनका दुःशासनको भीष्मकी रक्षाके लिये समुचित व्यवस्था करनेका आदेश	...	२५७९
१६-दुर्योधनकी सेनाका वर्णन	...	२५८०

१७-कौरवमहाराजियोंका युद्धके लिये आगे बढ़ना तथा उनके व्यूह, वाहन और ध्वज आदिका वर्णन	...	२५८२
१८-कौरवसेनाका कोलाहल तथा भीष्मके रथकोंका वर्णन	...	२५८५
१९-अर्जुननिर्माणके विषयमें युधिष्ठिर और अर्जुनकी बातचीत, अर्जुनद्वारा बलव्यूहकी रचना, भीमसेनकी अप्रसन्नतामें सेनाका आगे बढ़ना	...	२५८६
२०-दोनों सेनाओंकी स्थिति तथा कौरवसेनाका अभियान	...	२५८९
२१-कौरवसेनाको देखकर युधिष्ठिरका विषाद करना और श्रीकृष्णकी कृपासे ही विजय होती है यह कहकर अर्जुनका उन्हें आश्वासन देना	...	२५९१
२२-युधिष्ठिरकी रणयात्रा, अर्जुन और भीमसेनकी प्रशंसा तथा श्रीकृष्णका अर्जुनसे कौरवसेनाको मारनेके लिये कहना	...	२५९२
२३-अर्जुनके द्वारा दुर्गादेवीकी स्तुति, वरप्रप्ति और अर्जुनकृत दुर्गास्तवनके पाठकी महिमा	...	२५९४
२४-सैनिकोंके हर्ष और उत्साहके विषयमें धृतराष्ट्र और संजयका संवाद	...	२५९६

२५-(श्रीमद्भगवद्गीतायां प्रथमोऽध्यायः)

दोनों सेनाओंके प्रधान-प्रधान वीरों एवं राजकुमारोंका वर्णन तथा स्वजनपदके पाले भयभीत हुए अर्जुनका विषाद ... २५९७

२६-(श्रीमद्भगवद्गीतायां द्वितीयोऽध्यायः)

अर्जुनको युद्धके लिये उत्साहित करते हुए भगवान्के द्वारा नित्यानित्य वस्तुके निवेचन-पूर्वक शौन्ययोग, कर्मयोग एवं स्थितप्रज्ञकी स्थिति और महिमाका प्रतिपादन ... २६०१

२७-(श्रीमद्भगवद्गीतायां तृतीयोऽध्यायः)

ज्ञानयोग और कर्मयोग आदि तमस्त साधनोंके अनुसार कर्तव्य कर्म करनेकी आवश्यकताका प्रतिपादन एवं स्वधर्मपालनकी महिमा तथा कामनिरोधके उपायका वर्णन ... २६१२

२८- (श्रीमद्भगवद्गीतायां चतुर्थोऽध्यायः)

सगुण भगवान्के प्रभाव, निष्काम कर्मयोग तथा योगी महात्मा पुरुषोंके आचरण और उनकी महिमाका वर्णन करते हुए विविध वशों एवं ज्ञानकी महिमाका वर्णन ... २६२३

२९- (श्रीमद्भगवद्गीतायां पञ्चमोऽध्यायः)

सांख्ययोग, निष्काम कर्मयोग, ज्ञानयोग एवं भक्तिसहित ध्यानयोगका वर्णन ... २६३६

३०- (श्रीमद्भगवद्गीतायां षष्ठोऽध्यायः)

निष्काम कर्मयोगका प्रतिपादन करते हुए आत्मोद्धारके लिये प्रेरणा तथा मनोनिग्रहपूर्वक ध्यानयोग एवं योगभ्रष्टकी गतिका वर्णन ... २६४६

३१- (श्रीमद्भगवद्गीतायां सप्तमोऽध्यायः)

ज्ञान-विज्ञान, भगवान्की व्यापकता, अन्य देवताओंकी उपासना एवं भगवान्की प्रभाव-सहित न जाननेवालोंकी निन्दा और जानने-वालोंकी महिमाका कथन ... २६५८

३२- (श्रीमद्भगवद्गीतायामष्टमोऽध्यायः)

ब्रह्म, अभ्यात्म और कर्मादिके विषयमें अर्जुनके सात प्रश्न और उनका उत्तर एवं भक्तियोग तथा युक्त और कुष्ण मार्गोंका प्रतिपादन ... २६६५

३३- (श्रीमद्भगवद्गीतायां नवमोऽध्यायः)

ज्ञान, विज्ञान और जगत्की उत्पत्तिका, आसुरी और दैवी सम्प्रदायवालोंका, प्रभावसहित भगवान्के स्वरूपका, सक्राम-निष्काम उपासनाका एवं भगवद्-भक्तिकी महिमाका वर्णन ... २६७५

३४- (श्रीमद्भगवद्गीतायां दशमोऽध्यायः)

भगवान्की विभूति और योगशक्तिका तथा प्रभावसहित भक्तियोगका कथन, अर्जुनके पूछनेपर भगवान्द्वारा अपनी विभूतियोंका और योगशक्तिका पुनः वर्णन ... २६९१

३५- (श्रीमद्भगवद्गीतायामेकादशोऽध्यायः)

विश्वरूपका दर्शन करानेके लिये अर्जुनकी प्रार्थना, भगवान् और संजयद्वारा विश्वरूपका वर्णन, अर्जुनद्वारा भगवान्के विश्वरूपका देखा जाना, भयभीत हुए अर्जुनद्वारा भगवान्की स्तुति-प्रार्थना, भगवान्द्वारा विश्वरूप और चतुर्भुजरूपके दर्शनकी महिमा और केवल अन्वभक्तिके ही भगवान्की प्राप्ति का कथन २७०८

३६- (श्रीमद्भगवद्गीतायां द्वादशोऽध्यायः)

साकार और निराकारके उपासकोंकी उत्तमताका निर्णय तथा भगवत्प्राप्तिके उपायका एवं भगवत्प्राप्तिवाले पुरुषोंके लक्षणोंका वर्णन ... २७२७

३७- (श्रीमद्भगवद्गीतायां त्रयोदशोऽध्यायः)

ज्ञानसहित क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ और प्रकृति-पुरुषका वर्णन ... २७३९

३८- (श्रीमद्भगवद्गीतायां चतुर्दशोऽध्यायः)

ज्ञानकी महिमा और प्रकृति-पुरुषके जगत्की उत्पत्तिका, सत्त्व, रजः, तम—तीनों गुणोंका, भगवत्प्राप्तिके उपायका एवं गुणतीत पुरुषके लक्षणोंका वर्णन ... २७५२

३९- (श्रीमद्भगवद्गीतायां पञ्चदशोऽध्यायः)

संसारवृक्षका, भगवत्प्राप्तिके उपायका, जीवात्माका, प्रभावसहित परमेश्वरके स्वरूपका एवं क्षर, अक्षर और पुरुषोत्तमके तत्त्वका वर्णन २७६२

४०- (श्रीमद्भगवद्गीतायां षोडशोऽध्यायः)

फलसहित दैवी और आसुरी सम्प्रदायका वर्णन तथा शास्त्रविपरीत आचरणोंकी त्यागने और शास्त्रके अनुकूल आचरण करनेके लिये प्रेरणा २७६९

४१- (श्रीमद्भगवद्गीतायां सप्तदशोऽध्यायः)

भद्राका और शास्त्रविपरीत धर्म तप करनेवालोंका वर्णन, आहार, यज्ञ, तप और ज्ञानके पृथक्-पृथक् भेद तथा अन्तः, तत्, तत्के प्रयोगकी व्याख्या २७७५

४२- (श्रीमद्भगवद्गीतायामष्टादशोऽध्यायः)

त्यागका, सांख्यसिद्धान्तका, फलसहित वर्ण-धर्मका, उपासनासहित ज्ञाननिष्ठाका, भक्तिसहित निष्काम कर्मयोगका एवं गीताके माहात्म्यका वर्णन ... २७८४

(भीष्मवधपर्व)

४३- गीताका माहात्म्य तथा युधिष्ठिरका भीष्म,

द्रोण, कृप और शल्यसे अनुमति लेकर युद्धके लिये तैयार होना ... २८१३

४४- कौरव-पाण्डवोंके प्रथम दिनके युद्धका आरम्भ २८२१

४५- उभयपक्षके सैनिकोंका द्वन्द्व-युद्ध ... २८३३

- ४६-कौरव-पाण्डवसेनाका प्रमासान युद्ध ... २८२८
- ४७-भीष्मके साथ अभिमन्युका भयंकर युद्ध;
शल्यके द्वारा उत्तरकुमारका वध और
श्वेतका पराक्रम ... २८३१
- ४८-श्वेतका महाभयंकर पराक्रम और भीष्मके
द्वारा उसका वध ... २८३६
- ४९-शङ्खका युद्ध; भीष्मका प्रचण्ड पराक्रम तथा
प्रथम दिनके युद्धकी समाप्ति ... २८४३
- ५०-युधिष्ठिरकी चिन्ता; भगवान् श्रीकृष्णद्वारा
आश्वासन; धृष्टद्युम्नका उल्लाह तथा द्वितीय
दिनके युद्धके लिये कौशल्याण व्यूहका निर्माण २८४६
- ५१-कौरवसेनाकी व्यूह-रचना तथा दोनों दलोंमें
शङ्खध्वनि और सिंहनाद ... २८५०
- ५२-भीष्म और अर्जुनका युद्ध ... २८५२
- ५३-धृष्टद्युम्न तथा द्रोणाचार्यका युद्ध ... २८५७
- ५४-भीमसेनका कलिगों और निपादोंसे युद्ध;
भीमसेनके द्वारा शक्रदेव; भानुमान् और
केतुमान्का वध तथा उनके बहुत-से
मैनिकोंका संहार ... २८५९
- ५५-अभिमन्यु और अर्जुनका पराक्रम तथा दूसरे
दिनके युद्धकी समाप्ति ... २८६७
- ५६-तीसरे दिन-कौरव-पाण्डवोंकी व्यूह-रचना
तथा युद्धका आरम्भ ... २८७०
- ५७-उभयपक्षकी सेनाओंका प्रमासान युद्ध ... २८७१
- ५८-पाण्डव-वीरोंका पराक्रम; कौरव-सेनामें भगदड़
तथा दुर्योधन और भीष्मका संवाद ... २८७४
- ५९-भीष्मका पराक्रम; श्रीकृष्णका भीष्मको
मारनेके लिये उद्यत होना; अर्जुनकी प्रतिज्ञा
और उनके द्वारा कौरवसेनाका पराजय;
तृतीय दिवसके युद्धकी समाप्ति ... २८७७
- ६०-चौथे दिन-दोनों सेनाओंका व्यूहनिर्माण
तथा भीष्म और अर्जुनका द्वैध-युद्ध ... २८८८
- ६१-अभिमन्युका पराक्रम और धृष्टद्युम्नद्वारा
शल्यके पुत्रका वध ... २८९१
- ६२-धृष्टद्युम्न और शल्य आदि दोनों पक्षके वीरोंका
युद्ध तथा भीमसेनके द्वारा गजसेनाका संहार २८९३
- ६३-युद्धस्थलमें प्रचण्ड पराक्रमकारी भीमसेनका
भीष्मके साथ युद्ध तथा सात्यकि और
भूरिश्रवाकी मुठभेड़ ... २८९७
- ६४-भीमसेन और प्रदोत्कचका पराक्रम; कौरवोंकी
पराजय तथा चौथे दिनके युद्धकी समाप्ति ... २९००
- ६५-धृतराष्ट्र-संजय-संवादके प्रसङ्गमें दुर्योधनके द्वारा
पाण्डवोंकी विजयका कारण पूछनेपर भीष्मका
ब्रह्माजीके द्वारा की हुई भगवत्-स्तुतिका कथन २९०५
- ६६-नारायणावतार श्रीकृष्ण एवं नराश्वतार
अर्जुनकी महिमाका प्रतिपादन ... २९१०
- ६७-भगवान् श्रीकृष्णकी महिमा ... २९१३
- ६८-ब्रह्मभूतस्तोत्र तथा श्रीकृष्ण और अर्जुन-
की महत्ता ... २९१५
- ६९-कौरवोंद्वारा मकरव्यूह तथा पाण्डवोंद्वारा
रथेनव्यूहका निर्माण एवं पाँचवें दिनके
युद्धका आरम्भ ... २९१६
- ७०-भीष्म और भीमसेनका प्रमासान युद्ध ... २९१८
- ७१-भीष्म, अर्जुन आदि योद्धाओंका प्रमासान युद्ध २९२०
- ७२-दोनों सेनाओंका परस्पर घोर युद्ध ... २९२३
- ७३-विराट-भीष्म; अश्वत्थामा-अर्जुन; दुर्योधन-
भीमसेन तथा अभिमन्यु और लक्ष्मणके
द्वन्द्वयुद्ध ... २९२५
- ७४-सात्यकि और भूरिश्रवाका युद्ध; भूरिश्रवाद्वारा
सात्यकिके दस पुत्रोंका वध; अर्जुनका पराक्रम
तथा पाँचवें दिनके युद्धका उपसंहार ... २९२८
- ७५-छठे दिनके युद्धका आरम्भ; पाण्डव तथा
कौरवसेनाका क्रमशः मकरव्यूह एवं कौशल्याण
वनाकर युद्धमें प्रवृत्त होना ... २९३१
- ७६-धृतराष्ट्रकी चिन्ता ... २९३३
- ७७-भीमसेन, धृष्टद्युम्न तथा द्रोणाचार्यका पराक्रम २९३५
- ७८-उभय पक्षकी सेनाओंका संकुल्युद्ध ... २९४०
- ७९-भीमसेनके द्वारा दुर्योधनकी पराजय; अभिमन्यु
और द्रौपदीपुत्रोंका धृतराष्ट्रपुत्रोंके साथ
युद्ध तथा छठे दिनके युद्धकी समाप्ति ... २९४३
- ८०-भीष्मद्वारा दुर्योधनकी आश्वासन तथा सातवें
दिनके युद्धके लिये कौरवसेनाका प्रस्थान ... २९४७
- ८१-सातवें दिनके युद्धमें कौरव-पाण्डव-सेनाओंका
मण्डल और वज्रव्यूह बनाकर भीष्मण संघर्ष २९४९
- ८२-श्रीकृष्ण और अर्जुनसे डरकर कौरव-सेनामें
भगदड़; द्रोणाचार्य और विराटका युद्ध; विराट-
पुत्र शङ्खका वध; शिखण्डी और अश्वत्थामाका
युद्ध; सात्यकिके द्वारा अलम्बुषकी पराजय;
धृष्टद्युम्नके द्वारा दुर्योधनकी हार तथा भीमसेन
और कृतवर्माका युद्ध ... २९५२
- ८३-इराकान्के द्वारा विन्द और अनुविन्दकी पराजय;
भगदड़से प्रदोत्कचका हारना तथा मद्रराजपर
नकुल और सहदेवकी विजय ... २९५६

- ८४-युधिष्ठिरसे राजा सुतासुका पराजित होना;
युद्धमें चेकितान और कृपाचार्यका मूर्छित होना;
भूरिभवासे धृष्टकेतुका और अभिमन्युसे चित्रसेन
आदिका पराजित होना एवं सुशर्मा आदिसे
अर्जुनका युद्धारम्भ ... २९६०
- ८५-अर्जुनका पराक्रम; पाण्डवोंका भीष्मपर
आक्रमण; युधिष्ठिरका शिलघण्टीको उपालम्भ
और भीमका पुत्रचार्य ... २९६४
- ८६-भीष्म और युधिष्ठिरका युद्ध; धृष्टद्युम्न और
ताम्यकिके साथ विन्द और अनुविन्दका
संग्राम; द्रोण आदिका पराक्रम और सातवें
दिनके युद्धकी समाप्ति ... २९६८
- ८७-आठवें दिन धृष्टकेतु और पाण्डव-सेनाओंकी
रणयात्रा और उनका परस्पर घमासान युद्ध २९७२
- ८८-भीष्मका पराक्रम; भीमसेनके द्वारा धृतराष्ट्रके
आठ पुत्रोंका वध तथा दुर्योधन और भीष्मकी
युद्धविषयक वार्ताचीत ... २९७४
- ८९-कौरव-पाण्डव-सेनाका घमासान युद्ध और
भयानक जनसंहार ... २९७७
- ९०-हरावान्के द्वारा शकुनिके भाइयोंका तथा राजसूत
अलम्बुषके द्वारा हरावान्का वध ... २९८०
- ९१-घटोत्कच और दुर्योधनका भयानक युद्ध ... २९८५
- ९२-घटोत्कचका दुर्योधन एवं द्रोण आदि प्रमुख
वीरोंके साथ भयंकर युद्ध ... २९८७
- ९३-घटोत्कचकी रक्षाके लिये आये हुए भीम आदि
शूरवीरोंके साथ कौरवोंका युद्ध और उनका
पलायन ... २९९०
- ९४-दुर्योधन और भीमसेनका एवं अश्वत्थामा और
राजा नीलका युद्ध तथा घटोत्कचकी मायासे
मोहित होकर कौरवसेनाका पलायन ... २९९३
- ९५-दुर्योधनके अनुरोध और भीष्मजीकी आज्ञासे
भगदत्तका घटोत्कच, भीमसेन और पाण्डव-
सेनाके साथ घोर युद्ध ... २९९६
- ९६-हरावान्के वधसे अर्जुनका दुःखपूर्ण उद्धार;
भीमसेनके द्वारा धृतराष्ट्रके नौ पुत्रोंका वध;
अभिमन्यु और अम्बुहका युद्ध; युद्धकी
भयानक स्थितिका वर्णन तथा आठवें दिनके
युद्धका उपसंहार ... ३००१
- ९७-दुर्योधनका अपने मन्त्रियोंसे सलाह करके भीष्म-
से पाण्डवोंको मारने अथवा कर्णको युद्धके लिये
आज्ञा देनेका अनुरोध करना ... ३००७
- ९८-भीष्मका दुर्योधनको अर्जुनका पराक्रम बताना
और भयंकर युद्धके लिये प्रेरित करना तथा
प्रातःकाल दुर्योधनके द्वारा भीष्मकी रक्षाकी
व्यवस्था ... ३००९
- ९९-नवें दिनके युद्धके लिये उभयपक्षकी सेनाओं-
की व्यवस्था और उनके घमासान युद्धका
आरम्भ तथा विनाशदायक उत्पातोंका वर्णन ३०१३
- १००-द्रौपदीके पाँचों पुत्रों और अभिमन्युका राजसूत
अलम्बुषके साथ घोर युद्ध एवं अभिमन्युके
द्वारा नष्ट होती हुई कौरवसेनाका युद्धभूमिसे
पलायन ... ३०१५
- १०१-अभिमन्युके द्वारा अलम्बुषकी पराजय;
अर्जुनके साथ भीष्मका तथा कृपाचार्य,
अश्वत्थामा और द्रोणाचार्यके साथ तात्त्विक
युद्ध ... ३०१८
- १०२-द्रोणाचार्य और सुशर्माके साथ अर्जुनका
युद्ध तथा भीमसेनके द्वारा गमसेनाका संहार ३०२१
- १०३-उभय पक्षकी सेनाओंका घमासान युद्ध और
रक्षमवी रथनदीका वर्णन ... ३०२४
- १०४-अर्जुनके द्वारा निगलोंकी पराजय; कौरव-
पाण्डव सैनिकोंका घोर युद्ध; अभिमन्युसे
चित्रसेनकी, द्रोणसे धृतराष्ट्रकी और भीमसेनसे
बाह्लीककी पराजय तथा तात्त्विक और भीष्म-
का युद्ध ... ३०२७
- १०५-दुर्योधनका दुःशासनको भीष्मकी रक्षाके
लिये आदेश; युधिष्ठिर और नकुल-सहदेवके
द्वारा शकुनिकी युद्धतयार-सेनाकी पराजय
तथा शल्यके साथ उन सबका युद्ध ... ३०३०
- १०६-भीष्मके द्वारा पराजित पाण्डवसेनाका पलायन
और भीष्मको मारनेके लिये उद्यत हुए
भीकृष्णको अर्जुनका रोकना ... ३०३९
- १०७-नवें दिनके युद्धकी समाप्ति; रातमें पाण्डवोंकी
गुप्त मन्त्रणा तथा भीकृष्णसहित पाण्डवोंका
भीष्मसे मिलकर उनके वधका उपाय चिन्तना ३०४८

- १०८-दसवें दिन उभयपक्षकी सेनाका रणके लिये प्रस्थान तथा भीष्म और शिखण्डीका समागम एवं अर्जुनका शिखण्डीको भीष्मका वध करनेके लिये उत्साहित करना ... १०४५
- १०९-भीष्म और दुर्योधनका संवाद तथा भीष्मके द्वारा ज्यों सैनिकोंका संहार ... १०४९
- ११०-अर्जुनके प्रोत्साहनसे शिखण्डीका भीष्मपर आक्रमण और दोनों सेनाओंके प्रमुख वीरोंका परस्पर युद्ध तथा दुःशासनका अर्जुनके साथ वीर युद्ध ... १०५१
- १११-कौरव-पाण्डवपक्षके प्रमुख महारथियोंके युद्ध युद्धका वर्णन ... १०५४
- ११२-द्रोणान्वार्यका अधस्तवामाको अशुभ शकुनोंकी सूचना देते हुए उसे भीष्मकी रक्षाके लिये दृष्ट्युगते युद्ध करनेका आदेश देना ... १०५८
- ११३-कौरवपक्षके दस प्रमुख महारथियोंके साथ उनके वीर युद्ध करते हुए भीमसेनका अमृत पराक्रम ... १०६१
- ११४-कौरवपक्षके प्रमुख महारथियोंके साथ युद्धमें भीमसेन और अर्जुनका अमृत युद्धार्थ ... १०६४
- ११५-भीष्मके आदेशसे युधिष्ठिरका उनपर आक्रमण तथा कौरव-पाण्डव-सैनिकोंका भीषण युद्ध १०६७

- ११६-कौरव-पाण्डव-महारथियोंके युद्धयुद्धका वर्णन तथा भीष्मका पराक्रम ... १०६९
- ११७-उभय पक्षकी सेनाओंका युद्ध दुःशासनका पराक्रम तथा अर्जुनके द्वारा भीष्मका मूर्च्छित होना ... १०७४
- ११८-भीष्मका अमृत पराक्रम करते हुए पाण्डव-सेनाका भीषण संहार ... १०७८
- ११९-कौरवपक्षके प्रमुख महारथियोंद्वारा सुरक्षित होनेपर भी अर्जुनका भीष्मको रथसे गिराना, शरशय्यापर शिर भीष्मके समीप ईशरूप-भारी श्रुथियोंका आगमन एवं उनके कथन-से भीष्मका उत्तराधनकी प्रतीक्षा करते हुए प्राण धारण करना ... १०८२
- १२०-भीष्मजीकी महत्ता तथा अर्जुनके द्वारा भीष्म-को तकिया देना एवं उभय पक्षकी सेनाओं-का अपने शिविरमें जाना और भीष्म-युधिष्ठिर-संवाद ... १०८९
- १२१-अर्जुनका दिव्य जल प्रकट करके भीष्मजीकी प्यास बुझाना तथा भीष्मजीका अर्जुनकी प्रशंसा करते हुए दुर्योधनको संबोधित करने समझाना ... १०९३
- १२२-भीष्म और कर्णका रहस्यमय संवाद ... १०९७

चित्र-सूची

(तिरंगा)

- १-संजयको दिव्य दृष्टि ... २५४६
- २-द्रोणान्वार्यके प्रति दुर्योधन-का सैन्य प्रदर्शन ... २५९७
- ३-देवताओं और मनुष्योंको प्रजापतिकी शिक्षा ... २६१४
- ४-सूर्यके प्रति नारायणका उपदेश ... २६२३
- ५-समवर्षिता ... २६४०
- ६-सबमें भगवद्-दर्शन ... २६५६
- ७-अर्थायी भक्त युव ... २६६१
- ८-भारतभक्त द्रौपदी ... २६६२
- ९-भीष्मकेकायर ब्रह्म ... २६६८

- १०-भक्तोंके द्वारा प्रेमसे दिये हुए धन, पुष्प, फल, जल आदिकी भगवान् प्रत्यक्ष प्रकट होकर ग्रहण करते हैं ... २६८६
- ११-पुष्पात्मा ब्राह्मण सुतीक्ष्ण ... २६८९
- १२-राजर्षि अम्बरौष ... २६८९
- १३-भगवान्की प्रह्लाद आदि तीन विभूतियाँ ... २७०४
- १४-भगवान् विष्णु ... २७२४
- १५-भगवान् भीष्मण और अर्जुनके साथ विजय, विभूति, नीति और भी ... २८१३
- १६-भीष्मपितामहपर भगवान् भीष्म-की कृपा ... २८१३